24 May-anantnag 1,1.pdf **Title : Shri Bhanwar Gita (Braj Bhasa)**

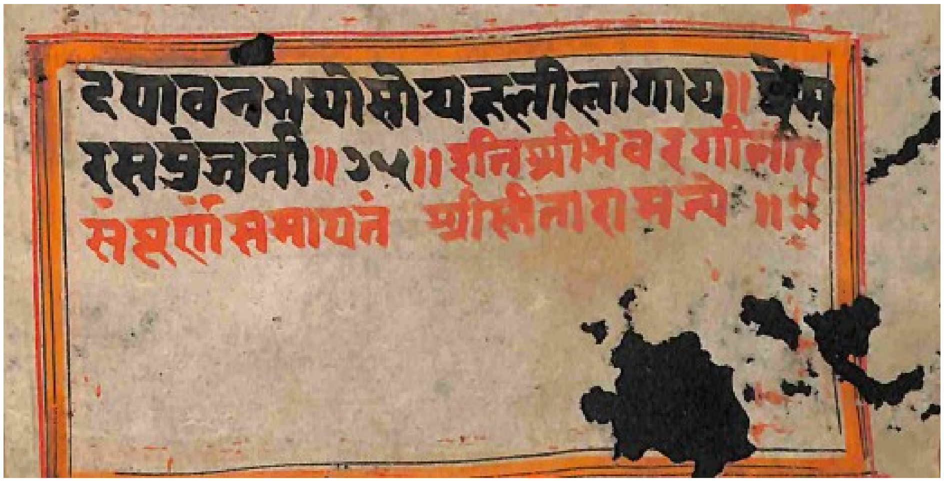
दणावनभूपोसोयहलीलागाय॥ प्रेम
रसपुंजनी॥७५॥ इतिश्रीभवरगीतां
संपूर्णंसमापतं श्रीसीतारामन्वे॥ ॥

पह्रिमिमंतृकैसभाषो ॥ पुलकितश्राननं
मलकसंगश्रावेसजनतापो ॥ विकल
कैंधरनीपरीव्रजवनिताश्रकाय ॥ टे
नलछोटघमोयह्रीईपोवानसखनाइ
तनोधनवासिनी :८ ॥ देनसमतेनह्री
हरिनाकोंश्रावटेवी ॥ श्रविलविलंबम

भ.
४

रसरावलसवरूपादिदिखावे॥ लो[illegible]क
पावन[illegible]चलसोहिसकासे॥ स
दरसब[illegible]नसवेजोतिइह्लपरका
स॥ [illegible]नोघसवासिनी॥ ७॥ कौनवल
कोज्योतितानकाकेकदक्यो॥ हमरे:
देहरासामसेमकोमारगाह्यो॥ नेनवे

वछ्कतिनासि[illegible]मोहनग्रुपरिखाय॥स्त्र
यिव्रयिसवसुवल्लीहरीश्रेमठगौरीलाप
सखासोनिस्यामके॥८॥परसवगुनउ
पायिद्रूपनिर्गुनद्वैतनकौ॥निरंकारनि
लैपलगातनतिहिसीनोगुनकौं॥हाथब
पावननासिकानैनबैननहिकांन॥९

॥

सुनत्योतियकामकीसकलविधकेधां
न ॥ सुनौब्रजवासिनी ॥ २ ॥ जोतुमबनोहि
नरलोकहोकेनिमाधनघाधो ॥ पाइति
विनगोहगाकुहोवनवनकोधायो ॥ आं
खिनमेंअंजनदिपागोवईनलियेहाथ
नेदन्नेमाटासनैहोकेउरेकोनन्दब्रजना

य॥ सखाहृनिस्यामके॥ १०॥ जाहिक
रोवसकान्हताहिकोअपेनानमाता
षीविलषेउबलांउविष्णुनरीमेंजाता
लीलागुनसुबलारिकैथ्यरिषायेननस्या
म॥ येगाशुकिरहपाइयेपारबलभरायो
म॥ हनोब्रजवासिनी॥ ११॥ नाहिवनावो

भ॰ ९

योगजोगपदुधंजाहिपावै ॥ प्रेमसहितनह
मपासिनंदनंदनगुनगाऔ ॥ नैनवैनम
नर्पवैमैमोहनगुनभरिसारे ॥ प्रेमबिसु
बोहखाडिकैकोनसमेटेपूवि ॥ सबात
निसासकै ॥१॥ भूरिभुरिजोहोयइसकों
तीसबटावै ॥ भीरछेउमैंस्वादकमकरि

हरिपद पावै ॥ धूरि हरी तैं यह तन भयो
धूरि हि तैं विलाउ ॥ लोक चतुर्दश धूरि
तैं सम दीप नव षंड ॥ सो ना ब्रजवासिनी
१२॥ कर्म धूरि की वात न कर्म अधिकारी
नाते ॥ कर्म धूरि कौं आति पेम अमसर न मै
माते ॥ न वह ही लौं सर्व कर्म है न व लोह

भः
७

ह्रीउरन्नाहिं ॥ कर्मबंधसबविस्वकेजीव
विरुधकौंजाइ ॥ सघास्वनिस्पासके ॥ ध
नमकर्मनिंदोकहाकर्मनेसदगतिहो
ई ॥ कर्मरूपतेंवलीनाहिंत्रिभुवनमेंको
ई ॥ कर्मननेउतपनहैकर्मननेकेनास
कर्मकरेतेंसतिकिरोयपारश्वलक्षरवास

सुनोब्रजवासिनी ॥ १४ ॥ कर्मपापशुभपु
ण्यलोहसोनेकीबेरी ॥ पाइनिबंधनदो
उकोउमानोवझनेरी ॥ शुभकर्मनेस्वर्ग
हैनीचकर्मनेभोग ॥ प्रेमबिनासबपापि
मेरिविषेवासनारोग ॥ सबाहुनिस्यामके
कंमभुरेनोहरीनागरकेहेकारे ॥ पद्मासन

भ·
८

सबद्वाररोकिंइद्रिनकोंमारबलख·
ग्रिजीतिलहदहोपहेंनासमाधिलगाइ॥
लीनहोतमायोन्यमेंज्योनिमेंज्योतिस
माई॥ सुनोब्रजनागरी॥१७॥ जोगीलोनै
भैनेभक्तनिजनरूपेजानै॥ श्रमपित्रुबेष
गटस्यामसहदराउरध्यानै॥ निर्गुनसगुन·

जोगाइ॥येलोगकहैपनाहि॥वेदग्राणे
नागनश्रजिपवांवीसजनजनाहि॥सुखा
ह्लानिस्यामके॥७॥जोउनकेगुनसोहिवे
दकौंनिर्गुनवषानै॥निरगुनसरगुनश्रा
मरविउपतिषट्जोगान॥वेदश्रुतिनैंषो
जिकेपायोकिनंरूनपक॥गुनरूकेगु

भ. ५

नहोप्हिंतोकाहेंआकासकीटेक ॥ ख
नेउजनागरी ॥५॥ जोउनकेगुननाहिं
औरगुनभएकहांते ॥ बीजविनातरुज
मतमहिनमकहोकहांते ॥ बागुनकी
परछाहरी ॥ मायादर्पनबीच ॥ गुननेगु
नन्योरभएअमलवारिजलकीच ॥ स.

षासनिसामके ॥ २० ॥ मायाकेगुनषोषे
रहरिकेगुनज्ञानो ॥ वागुनकोइतिमा
ऊषानिकाहेकोमांनो ॥ जांकेगुनषरू
रूपकौजानननपायाभेद ॥ तानेनिर्गुण
ब्रह्मकौंबदनउपांनिषदवेद ॥ सनोब
ननारी ॥ २१ ॥ वेदऊहरिकेरूपाखाल

क
१०

सुषनैज्योनिकरै । कर्मेकापशासुनकसवै
पिछलसोधिविसरै ॥ कर्ममध्यइंदेसव
किनहिंनपायोदेषि ॥ कर्मरहितनरीपाव
येनातेंश्रमविशेषि ॥ सावास्वानिस्पामके ॥
येमऊकौऊवस्वउपदैषैलोलागे ॥ वलह
हिविनकरोकहांवेमीभ्रत्रागो ॥ नरहन.

११

वेदकेरूपकोंगुननहिपायोजाति॥ तो
उनकोकहाजानियेगुनातीतभगवा
न॥ स्हनोघनवासिनौ॥ २३॥ नरूनघका
सघकासमेतेंतामेंरह्योहुआहैं॥ दिव्याहः
खिरीरूपकोंभलेवर्नदैध्योजाई॥ २४॥
जिनिकेवघाचैनहीदेवैकोवरूप

भ.
११

तिनविस्वासमकोउपजेजेपरेकर्मकेफल
मेवासनात्यागके ॥४७॥ जवकरिवेनि
तकर्मभक्तिफलतामेआई ॥ कर्मरूपनेक
हेकोनवेछूटेगोनाई ॥ कर्मकर्महीके
येकर्मनामेकेजाई ॥ नवग्यानमनिहकर्म
करिनिर्गुनवत्सलसमाई ॥ सवेगुनवासि

सो॥ जोउनकेनहिंकर्मकर्मबंधनकैसा
है॥ जोनिर्गुनहैवस्तुमात्रपरमांनवनतौवै
जोउनकोपरमानहैतौप्रथमताकाकछुना
हिं॥ त्रिगुनभयप्रतीतकेसगुणसकल
जगमांहि॥ सत्वारहनिष्यामके॥ ४४॥ जोउ
नसौवेहरिसिमाजवस्वरैहैसारे॥ पसवन

भ.
१२

हिमैंवासुदेव अच्युत हैं न्यारे ॥ इंद्रीहृषि
विकार नेरे हृत अधोक्षज ज्योति सहज सरू
पी ज्ञानकी आपाति जिनिकों होति ॥ ख
नोखनवासिनी ॥ ९ ॥ नास्तिक जे ये लोय
क हा जाने निजरूपै ॥ प्रगट भानकों छाडि
गहैपरखांरी भूपै ॥ हमेरे विनय परद्रुपसी

पैरनिकंजुसुहाई ॥ ज्योंकरनलग्रामल
केकौंनिकबलिदिखाई ॥ सखाम्हनिस्या
मके ॥ ४९ ॥ ऐसेमैनंदलालभएनैनबाबिके
भोरे ॥ ध्यारगापकाविज्झाईबनेवीरीसुह
वागे ॥ ऊधोसेंसुखकोरीकैंनिनेरीसो
वारबात ॥ प्रेमसमरनसुवावेनैश्रवनसुंज

भ.
१५

अैसेनधुवानन॥ नरकुरसरीतिनिकी॥ ४१॥
अहोनाथरमानाथऔरयदुनाथगुसांई
नंदनंदनबिडरातफिरततुमबनबगा
ई॥ काहेनफेरिकृपालहोइगाइग्वाल
निसुधिलेउ॥ दुखनिधिजलमाहिबू
डहीकरगालबननेटरु॥ निठुरकहांकेर.

ह्रोइ ॥ कोउकहैब्रह्मोटरमैदेऋनौबैनव
नावै ॥ इरिडरिवनकोशोटकहालिपैलो
नूलगायो ॥ हमकोनहमापिपपकरोहम
कोहमसोकोरि ॥ वृऋनाईकेगावरेमीति
नमोतोरि ॥ पकरीवारजी ॥ २ ॥ कोउक
हैब्रह्मोटरमैदेनाफिरीलेनडारी ॥ पऋख

लविपाककहोकोनपियूनमाहिमिठाई ॥
हूहूसवरसमधपीतिहैतातेवोलैरीन ॥
नलविनकहोकैसेनिपेपराधीनयेमी
नाबवारोगावै ॥२१॥ कोउकहैहोस्याम
कहाइतनापगायेहो ॥ मथुराकोश्रीयकाउ
पायमहाराजेभएहो ॥ सेंकछुइमनाबरो

मानतकोऊंनाहि ॥ सुबलावयसनिडी
गयेबलीडरेजुगमाहि ॥ पराक्रमजानि
के ॥ ३३ ॥ कोउकरेहोसनामबाहनमारन
गोवृत ॥ गिरिगोवर्द्धनधारिकरीरक्षा
नमकेसै ॥ ग्वालसुननसतग्वालनैरा
खिलियसकठौर ॥ खिरकसबनलसबरा

हिहोसिहसिनंदकिसोर ॥ चौरिबिनलै
गए ॥ रथ ॥ कोउकदैए निठुर ॥ इनैपाति
कनहिध्यावै ॥ पापपुण्यकेकरनहारए
हैंआपै ॥ इनकेनिरदैरूपमेनाहिंनको
उचित्र ॥ पैण्णावनमानिहरैउनताबा
लबरिउ ॥ सिवपकोनके ॥ रथ ॥ कोउक

हैरीआजनहीआगैंनेवलिआई॥राम
चंद्रकेरूपप्रमेंसेहीनिउराई॥यज्ञक
रावनजातहैविश्वामित्रसमीप॥मग
मेमारीताड़िकारघुवंशीकुलदीप॥
वालकीर्तिनिपट॥२८॥कोउकहेप
परमधरमरहीजिनसेलदलद्वा

भ:
१६

णसंयानृनयधेशावध्यकेसवे ॥ सीतान्नृ
केकहैतेलुपनृपापेकोप ॥ सवुध्रंग
छेरीविरूपकरिलोगनिलहालाप
कहानांकीकथा ॥ २७ ॥ कोउंकहैरी
हनोशोरइनकेगनसालों ॥ बलिराजा
पैगयभूमिमागनवनमाली ॥ मोवाे

बावनरूपकरिपवरनभपछकसमय
मेस्त्रवछोडिकैपह्योपीठिपरघाव॥लो
भकीनावेप॥२॥कोउकोहूरीकह्रोके
ह्राहिराणकसपवेपूविगाह्यो॥परम:
छोठप्रह्लादपितासोंमनह्रुवेकरा
ह्यो॥ह्नेनषपनेकोंटेनह्रोसिद्धांतडव

ण्वा ३ ॥ इतिवपुधरिनृसिंहकोबधनिवेद
होजाय ॥ विनापुरायही ॥ ह्वै ॥ कोउकहै-
यनिपरसुरामहोयमातामारी ॥ फरस
केपथपतिफेरीभूमितिगीसंघारी ॥ घ्योति
नकुंउभाइकेपाछेअपनेपित्र ॥ इतिके
तिदेयरूपमेनाहिनकोउंविच ॥ विलगुक

हामानिपै ॥ ५ ॥ कोउकहैरीकेहरादोससि
सपालनरेसमाहि ॥ आइकरनकोगयोनर
पतिभीषमकेदेसमाहि ॥ दलबलस्योविव
रानकोठाठाहोइछविवाढि ॥ इनिबे
लकरिइललीहरीछुधितणासहुखिका
ठि ॥ छापनैसवारयो ॥ ५ ॥ इतिविपिवेकं

आवैसपरमप्रेमअनुरागी ॥ औरउपपिय
वेदिनउहांदेखएमनवलागी ॥ रोमरोमर
हैव्यापिकैजैनकैमोहनउराय ॥ रंगो॰
लौप्रेमको ॥ ५ ॥ रखनइनिकोप्रेमभमैउ
धवकोभाज्यो ॥ तिमरभावआवैसबउ
नमुचमेमनलाज्यो ॥ मनमेमकहीकीव॰

पाइकैलेमाथनिजधारि॥ परमकृता
रथकैरामोत्रिभुवनज्ञानेहवारि॥ वंद
नाजोग्यण॥ ४४॥ कुवरुकहैगुनगाय
स्यामके॥ इतिहिरीकांड॥ नोमेलेषेमा
भक्तिस्याममहृद्रकीपाई॥ नाहराविधि
यहरीकहीसोविधिकहौवनाइ॥ ना

भ.
१९

नैसोमनखुद्रहोयइविधातानमिलाय
पायरसप्रेमको ॥४४॥ नाहीनलागइकम
मरमोकहूनसवैप्रतिउतरबानै ॥ नके
तिनकीनितिगातिप्रेमरसरूपरीझाने
छिनिपगातेसुमपोवरैकैनमनंदरस
चोर॥ नमरहीमोकपढोहोतोमोरहन

नंदकिसोर ॥ इहानेडरीहो ॥ ४८ ॥ को
उकेहरीविखमाऊनेनेहैकारे ॥ कप
टकुटिलकेकोटपरमसमाउषमहिहा
रे ॥ एकस्पानतनवपरसिकेंजरानधाउ
लैबेग ॥ नापाछेकिरीमधूपइदला
येमेरामुजेग ॥ कहाइनकोदया ॥ ४९

कोउ कहै रे मधुप भेष उनही कौ धार्‌यौ ॥
स्याम पीति गुंजार वैंण किंकिनि झनका
र्‌यौ ॥ वा पुर गोरस चोरि कै फिरि आयो
या देस ॥ इनि कौ जिन मानो कोई कपटी
इनकौ भेस ॥ चोर जिन जाय कछु ॥ ५८ ॥
कोउ कहै रे मधुप कहै सत्रागीन मकौं

कौंनैंगुनयौंजांनियेहै अविरतहैंहमकौं
कारोनतू अतिपानकीउ छपीरोनजानि
है ॥ देषिले आरसी ॥ ७५ ॥ कोउकहैहेम
धूपकूरामोहूनउनगावै ॥ लटेकपटमो
परमप्रेमनाहिनअविपावै ॥ जानकीतूंहो
हीरभांतिकेसवरसलियेरहोराय ॥ एसे

बोरीब्रजबासिन्हीकेउनमैंपतिपाय
लहैहमजानिकैं॥५॥कोउकहैहैमथु
पकूलालनूरमकीजानैं॥बूडनकूस्मप
वैठिसवैआपनासिरमानैं॥आपनसोह
मकोकिंपावाहननहोमनिमेरू॥दुविपा
रसउपजायकैंदुखिनप्रेमआनंद॥कप

रकेक्षेरमों ॥५१॥ कोईकहैरेमधुपको
नंतमेंकहेरेमधुकारी ॥ लिषेलिषिनेउ
घपांगांगांटिप्रेमीबंधकारी ॥ हषिराषा
नाकिप्रेवृजनकेश्रवनश्रपंरंगीबात
षवव्रजनमेंश्राईकहाकर्नकोंनकों:
बात ॥५२॥ कोउकहैरेमधुपयेषट:

पट्को पसेद्ब्यो ॥ षुवलो हैं व्रन देषा
माद्रिको उंनादिरि विणथ्यो ॥ वैंधेवन
नैपरजमेकाणपोरागान ॥ षलश्रमन
सममानली श्रमनेलोषिडराहू ॥ वादि
घरासिकना ॥ ५२ ॥ कोउकहैंमथु
पत्तानउलोसेलेप्राण ॥ सुनिकेपोजेरासि

वफे [illegible] निवे [illegible] बनाये ॥ बेदउपनिष
द [illegible] ॥ [illegible] गहिलेत ॥ तिनकोध्या
[illegible] कविसथारेत ॥ यो
[illegible] नाकौर [illegible] ॥ ५४ ॥ कोउकरेघरोमय
पानिधृ [illegible] वाविबदजानो ॥ तकेविनके
निजगावे [illegible] वृ [illegible] नवरोहै धानो ॥ येइमना

नरिजानिदेवरु [illegible] पुगुन [illegible] ॥ वि
गुनअमेपेवनीने [illegible] पेघ [illegible]
[illegible] ॥ सत्रावानिस [illegible] ॥ [illegible] ॥ बलगुनन
दैवहोमयुपनवहि [illegible] लाजे उगातु ॥ दें [illegible]
मानमहरोसामसवनेरे [illegible] ॥ ६
हानोवीपदवीहनागाय [illegible]

के [illegible] कियेरासीनृपति
[illegible] ॥ [illegible] जानको ॥ ५८ ॥ कोउक
[illegible] गीनमवेल ॥ जब
बनीर [illegible] योइद्रिनकोमेला ॥
मधुवना [illegible] इकैश्रापगोजल
मेह ॥ इन [illegible] भालोगहेगाहेकको

भ.
२५

उनाहि ॥ वृनि जो तन नहीं ॥ ५७ ॥ कोऊ
है अहो मधुप साधु मधुबन केरो सं ॥ ये
रनहां के गुड़ लोग कै है पोंकैसे ॥ बब
गुन गुन गादि लेन है गुन कोउ रमेटि
मोह तनातीउन कौन सों दिन मसाधुन
को भेटि ॥ गाठि को पाप कै ॥ ५८ ॥ कोउ

कैसेभुवह्वेहरिवममेजोसंगी ॥ को
होहरितनस्यामसकलवाततुवनवे
गी ॥ गोकुलमेंनारीकोउपवननाहि
भुवारि ॥ मदनत्रभंगीआइहैंकरीब्रव
गानारि ॥ अपगुनसीलकी ५८ ॥ रीहरिसि
टिगोविंदकहतउधोप्रतिगोपी ॥ मेंरा

सेंग्पारिकहैकेहृकुललज्यालोयो॥
नायाछेइकवारहौरोटसकुलब्रजन
रो॥ हाकूकणामयनाय्यहोकेपावक
लसुरारि॥ फाहिहियोचल्यो॥ २७॥ उस
गेज्योकोइसुलिलश्रमलेवनकीयार
नि॥ भीजतसत्रगनीरंकंचुकीवडगुन

हारनि ॥ नाही प्रेमसुधा वेशामैं उडव बुले
वहाइ ॥ भली ज्ञान की मेडरी ब्रजैम
दीनी धाइ ॥ ढुलके नैन भए ॥ ६१ ॥ प्रेम
ग्रंथमा करन सहज जो भक्ति प्रकासी ॥
द्विविधा ज्ञान मलानि मरतानि गारी
नासी ॥ करन भयो विसेस भयो हती ॥

भ०
१९

कौंनिजपात्र ॥ हौंनौकृतघनकृतघनकैगयोइ
नकेदरसनमात्र ॥ मेरिमलत्तानकों ॥ ६
धुनिधुनिकहेहरिकहनवाजपकोंन
पठायो ॥ मेरनकौकुकुमरमजानिप
कौनरिपायो ॥ हौंकरौंविजमयोंव
जीतानकर्मकोरूपनामसवशेमग्रासक्त

कैऊँललन्यारहीलोपि॥ धनपगोपिकें
पैवैसेमयोटमेरिमोहनकोध्यावै॥ का
हैपरमानंदप्रेमपदवींनपावै॥ ग्यान.
ध्यानसबकर्मनैप्रेमपरेहैंसोव॥ हेल
हिपटनरटेनलोंहीगावनलेकेंव॥ वि
वमनाउडिकी॥ २४॥ धमधनपलोग

भ॰
२३

भजनहरिकोजोरहै॥ औरकोउधन
धारहिप्रेमपावनेरकैहैं॥ मेरेपालकुग्र
ग्यानकौउरसेमदरथावोपितवजोख्या
वज्रप्रेमकीलहननथायोआय॥ अथा·
प्रमकुरीमर॥१८ प॥ भुविरुधनिकटेसवेन
साधुसगतिउतमहैभाई॥ पारसपरस

लोहमात्रकेवचनहैनाई ॥ गोपीप्रेमप्र·
मातकौहोयषवेशबोपाइ ॥ उद्धवनेमधु
कूभयोइविधातानमिलाय ॥ पायपर
सप्रमकौ ॥ २२ ॥ धुनिधुनिकेहूपवन
पायप्रशमोहोंनहिलिवारभयपेलो ॥
मेंगास्ताकारिकरूननिंघमवहीनै·

ग्रहौ ॥ अबहूँ रै ब्रज भूमि कौ मारग मैं को
भ्रौ ॥ विचरत पट मो पर पै सब हलनी
वनश्री ॥ स्रुतिन कुंडल लै भए है ॥ ६१ ॥ के
मैं ह्वै उमे गुल्म लता बेली वन माही ॥ आ
वन जान हू भा प पटै मो पर र पर कदाहीं ॥ मो
उमेरे उस मन हा जो कछु करौ उपाय ॥ मो

हनहोहिषसत्रनायवृमोगोजाय ॥ क्र
पाकरिदेहिनो ॥ ६० ॥ वैसेमनअभिला
षकरूंनमथुराकौंआवत ॥ गाटगाटु
लकेरोमथुराआवेसननावत ॥ गोपी
जनगावनलगेमोहनगुनगायेमलि ।
नौवनिकौंलेकहाकरैंजवलहियेजी

वनभूलि । भक्तकौसारइह ॥ ८५ ॥ ऐसे
सोवनजहां स्याम नहां आयो पायो ॥ प
रिकमोरहोत प्रेमसों वूडत ननायो ॥
कहुं निरखता स्यामकी केक्राधिनरोउ
नैन ॥ कहुं व्रजवनिता प्रेमकी वोलत
रसभरे वैन ॥ सवोनेदलाडिले ॥ ८६ ॥ क

लागामयप्रकासिकुनानमूदीनव
कुली॥ नवकूलीलाकेहेलाभजवेलेलो
वापीकुरी॥ मजामोभनजायकेनिं
नमूहोरूप॥ मोनमकोंभवलबहान
नेकूमेलोकप॥ कोंनयधमेंहै॥११॥
भ्रतिभ्रतिकहैमहोवलोंजीयवंसा

भा
र

वनगहिये ॥ पासप्रेमकौमनजायगो
पिनेमगलहिये ॥ थोरकपासवकोलि
कैउनिलोगनिसबदेरु ॥ नानकहूटौ
मौनहैसबहींनिहमनीरु ॥ करोगेना॰
कस ॥ ७२ ॥ हननसमाकेवैंनैनैनुभावि
भापटोरुं ॥ विवसप्रेमप्रावेसरहीस॰

पिनाहिंनिकोउ ॥ गोंमगोंमग्रतिगोवि
काकैगपसावैरगाम ॥ कल्पगोवरसा
वमैव नवतिनाभईपान ॥ उलीहस्र
गमगाते ॥ ७ग ॥ कैसवेनकहीमलेम
वापठेपहथिलावन ॥ श्रीगगवरमरे
मातिनहीनेलगेदिषावन[illegible]मोमेउ

भ·
२९

नमे श्रीनंरायपकौ दिगनाहिं ॥ ज्यों दे
बीमें मांक बेग्यांमें उन ह्रीमाम्हिं ॥ नंरंग
निवारिज्यो ॥ ७४ ॥ गोपीश्रीगुरदिषायप
ककरिकैंवृनवारी ॥ ईंधवकौभमंनिवा
रिउरिव्यामोह्किनारी ॥ म्रपनेहूपदि
षायकैं ॥ ७५ ॥ नोंवकरीडरायजनस्रक

रणावनभुपोसोयहलीलागाय॥ प्रेम
रसपुंजनी॥ १५॥ इतिश्रीभवरगीतां
संपूर्णं समापतं श्रीसीतारामन्ये ॥९